(अहले दिल के लिए तोहफ़ा)
आतिशी दरिया
उतरना
इश्क़ है
लेखिका: सिम्मी ग़ाज़ीपुरी

आतिशी दरिया उतरना इश्क़ है

चाह में ह़द से गुज़रना इश्क़ है

इश्क़ है आंसू छुपाना आंख में

चुपके चुपके आह भरना इश्क़ है

इश्क़ है पलकें झुकाना शर्म से

और आंखें चार करना इश्क़ है

इश्क़ है दिल में छुपाना इश्क़ को

कोई पूछे तो मुकरना इश्क़ है

इश्क़ है उंगली में उंगली डालना

बैठकर नाख़ुन कुतरना इश्क़ है

इश्क़ है जी भर के उनको देखना

देखकर सजना संवरना इश्क़ है

इश्क़ है बस इश्क़ है हां इश्क़ है

अब किसीसे क्या हि डरना इश्क़ है

इश्क़ है फूलों पे बैठी तितलियां

पुर तरन्नुम कोई झरना इश्क़ है

इश्क़ है जीना उसी के वास्ते

और सिम्मी उसपे मरना इश्क़ है

तू ही करेगा यार कोई इंतेज़ाम कर

ये दिल है बेक़रार कोई इंतेज़ाम कर

आजा तेरे बग़ैर मैं सखियों के सामने

होती हूं शर्मसार कोई इंतज़ाम कर

रुकता नहीं है दिल में है तुर्की सा ज़लज़ला

आ रोक इंतेशार कोई इंतेज़ाम कर

दिन से महीने और महीनों से साल तक

करती हूं मैं शुमार कोई इंतेज़ाम कर

है तेरे ज़िम्मे इश्क़ का पर्चा करा दे पास

अनपढ़ हूं मैं गंवार कोई इंतेज़ाम कर

डरती हूं बह ना जाए कहीं यार चश्मे नूर

आंखें हैं अश्कबार कोई इंतेज़ाम कर

अब के ग़मे फ़िराक़ में जाऊंगी जान से

कहती हूं बार-बार कोई इंतज़ाम कर

सिम्मी को आके घेरा है ग़म के हुजूम ने

ऐ मेरे ग़मगुसार कोई इंतज़ाम कर

गुज़र रही हूं शबो रोज़ इम्तेहान से मैं

तुम्हारे इश्क़ मैं मारी ना जाऊं जान से मैं

नज़र से इश्क़ का इज़हार अब पुराना हुआ

है तुमसे इश्क़ सुनो कहती हूं ज़बान से मैं

वो एक हुजरा जो मख़सूस है तुम्हारे लिए

उड़ा चुकी हूं परिंदों को उस मकान से मैं

उसी कमान के हो जाओगे असीर सुनो

नज़र के तीर चलाऊंगी जिस कमान से मैं

वो आने वाले हैं सिम्मी वो आ रहे हैं अभी

सजाए रखती हूं दिल को इसी गुमान से मैं

इश्क़ तुझसे कर लिया है ह़ौसले की दाद दे

फैसला मुश्किल था लेकिन फ़ैसले की दाद दे

तेरे दिल पे क़ब्जा मुश्किल था मगर मैं कर चुकी

मोजेज़ा ये हो चुका है मोजेज़े की दाद दे

तेरे बारे सोचती रहती हूं अक्सर जाने जां

जागती हूं रात भर मैं जागने की दाद दे

तेरी बातें तेरा लहजा तेरे अंदाज़ो हुनर

सीखती मैं जा रही हूं सीखने की दाद दे

इश्क़ तुझसे हो गया है इसलिए या उसलिए

इसलिए की दाद दे या उसलिए की दाद दे

इश्क़ दोनों को हुआ है हां मगर मेरे सनम

पहले मैं ही बोलती हूं बोलने की दाद दे

याद करना याद करना याद करना याद बस

मशग़ला ये हो गया है मशग़ले की दाद दे

दिल में सिम्मी ने रखा तुझको फक़त तुझको सनम

सबको रखा हा़शिए पर हा़शिए की दाद दे

ज़ब्त की आग में झुलसती हूं

इक झलक को तेरे तरसती हूं

आने लगती हैं तेरी बाहें याद

सर को तकिए पे जैसे रखती हूं

उंगली काटी है सेब के बदले

जब तुझे ह़द से याद करती हूं

जाने समझेगा कब मेरी बातें

मैं तो बातें तेरी समझती हूं

इश्क़ करता है रोज़ ज़ेरो ज़बर

रोज़ जीती हूं रोज़ मरती हूं

ज़िक्र करके तेरा मेरी सखियां

जब भी बनती हैं मैं बिगड़ती हूं

प्यार दरिया है तेरा मैं जिसमें

डूब जाती हूं फिर उभरती हूं

रहगुज़र सिम्मी चाहे जैसी हो

वो जो कहदे कि चल तो चलती हूं

आंख से जाम पिलाऊं तू इजाज़त दे दे

मैं तेरी शाम सजाऊं तू इजाज़त दे दे

बंद मुट्ठी हो मगर नाम नुमाया हो तेरा

मेहंदी कुछ ऐसे रचाऊं तू इजाज़त दे दे

तू मेरे ख़्वाब में आए ये इजाज़त है तुझे

मैं तेरे ख़्वाब में आऊं तू इजाज़त दे दे

ये ज़रूरी है सनम ख़ून की गर्दिश के लिए

मैं तुझे हाथ लगाऊं तू इजाज़त दे दे

मेरे यारा तेरे नाज़ुक से हसीं हाथों पर

फूल होठों से खिलाऊं तू इजाज़त दे दे

मिलने आऊं तो मेरी जान समझ मजबूरी

मैं अगर कह दुं में जाऊं तू इजाज़त दे दे

जान सिम्मी की अमानत है तेरी जाने जिगर

जान मैं तुझ पे लुटाऊं तू इजाजत दे दे

शबे फ़िराक़ सताती है रोने लगती हूं

तुम्हारी याद जो आती है रोने लगती हूं

गुलों के शोख़ बदन से लिपट के जब तितली

विसाली लम्हे बिताती है रोने लगती हूं

लचकती शाख पे बैठी सुरीली कोयल जब

मिलन के गीत सुनाती है रोने लगती हूं

बिछड़ के हंस से जब कोई हंसिनी बरसों

ता अल्लुकात निभाती है रोने लगती हूं

तुम्हारे याद के जंगल में मोरनी कोई

थिरकती नाचती गाती है रोने लगती हूं

तुम्हारे जिस्म को छूकर के आ रही ये हवा

तुम्हारी ख़बरें बताती है रोने लगती हूं

तलब में क़ैस के हसरत से जब कोई लैला

दुआ को हाथ उठाती है रोने लगती हूं

खुदा ए पाक से रांझे की आरज़ू करके

जबीं को हीर झुकाती है रोने लगती हूं

तुम्हारे नाम की चूड़ी सनम कलाई में

खनक के शोर मचाती है रोने लगती हूं

ग़ज़ल भी खूब है जानां के अब तो सिम्मी से

तुम्हारा ज़िक्र कराती है रोने लगती हूं
मैं तेरा प्यार ना पाती तो जाने क्या होता
तेरी नज़र में ना आती तो जाने क्या होता

मुझे सुकूं नहीं मिलता तेरे क़रीब थी पर
तुझे गले ना लगाती तो जाने क्या होता

शबे फ़िराक़ के सदमे ने मार देना था
जो तेरी याद ना आती तो जाने क्या होता

हुज़ूरे वाला से इज़हार होना मुश्किल था
क़दम जो मैं ना बढाती तो जाने क्या होता

वो मेरे ख़्वाब में आया है आके लौट गया
अगर मैं ख़्वाब में आती तो जाने क्या होता

ख़ुदा का शुक्र है वो हो गया है सिम्मी का
दुआ जो रंग नाल आती तो जाने क्या होता

तुम कहां हो मुझे पलकों पे सजाने वाले

अब तो आ जाओ मेरे नाज़ उठाने वाले

मुझको बदनामे ज़माना की विरासत कहकर

ज़ुल्म करते हैं बहुत मुझ पे ज़माने वाले

तू सलामत रहे ता उम्र दुआ है मेरी

किस्सा-ऐ-दर्द सुना कर के सुलाने वाले

अब तेरा हक़ ना रहा दिल के चमन पर मेरे

गुलश-ऐ-इश्क सरेआम जलाने वाले

तेरे ऐबों को किया करती हूं पर्दा पोशी़

मुझको बदनाम जहां भर में बताने वाले

तीरगी हद से बढी दिल के नेहा़खा़नों में

लोग जिंदा भी नहीं शम्मा जलाने वाले

सिम्मी करती है दुआ हो तेरी मंजिल साहिल

मेरी कश़्ती को लबे दरिया डूबाने वाले

उभर रही हूं कभी डूबने की हालत है

अगर यही है तो फिर हां मुझे मुहब्बत है

ले तुझको बख्श दिया शाहे इश्क का मनसब

हमारे दिल के क़िले पर तेरी हुकूमत है

शबे फ़िराक़ घुटन देके लौट जाती है

तेरे बग़ैर भी ज़िंदा हूं ये ग़नीमत है

ये मेरा इश्क़ मेरा दिल है मेरी मर्ज़ी है

ज़माने तुझको भला किस लिए शिक़ायत है

मैं किस से बच लूं कहो किस पे जाॅं लुटा डालूं

मेरे हबीब की हर इक अदा क़यामत है

बस एक जुमले में कहती हूं सिम्मी दुनियां से

किसी से पाक मुहब्बत भी इक इबादत है

दिल में है इंतेशार सनम आपके बग़ैर

रहती हूं बेक़रार सनम आपके बग़ैर

दुनियां की सारी ऐश ज़माने की हर ख़ुशी

करती हूं दरकिनार सनम आपके बग़ैर

झुलसा रही थी रूह दिसंबर की ये तपिश

तड़पी हूं बार-बार सनम आपके बग़ैर

मुरझा रहे हैं फूल लो करने लगी है सोग

गुलशन की ये बहार सनम आपके बग़ैर

मुझको ज़रा बताओ के मौजे ग़मे ह़यात

कैसे करूंगी पार सनम आपके बग़ैर

फीका सा लग रहा है काजल के बावजूद

आंखों का ये खुमार सनम आपके बग़ैर

बिखरा सा टूटा फूटा अधूरा सा लग रहा

सिम्मी का सारा प्यार सनम आपके बग़ैर

फ़सले गुल कर गुलाब कर मुझको
अपनी आंखों का ख़्वाब कर मुझको

आला मनसब पे दिल के फाइज़ कर
इश्क़ का माहताब कर मुझको

यार बैठा है रूबरू आकर
ऐ हवा बेहिजाब कर मुझको

सादा पानी है ज़िंदगी मेरी
लब से छूकर शराब कर मुझको

जाने जाना तू ज़ात को अपनी
एक शब दस्तियाब कर मुझको

अपनी बाहों के मौज में भर ले
खुद में फिर ग़र्क़ आब कर मुझको

कोरा कागज़ है अब तलक सिम्मी
यार पूरी किताब कर मुझको

वह तन्हा चंद लम्हे हाय तोबा

मेरी बाहों में तुम थे हाय तोबा

सुलगता जा रहा है जिस्म अब तक

तेरे लब के वह शोले हाय तोबा

कभी नज़रें चुराता है नज़र से

कभी बाहों में भर ले हाय तोबा

मेरी उम्मीद से बढ़कर के निकले

सनम तेरे इरादे हाय तोबा

चली जाओ के कोई देख लेगा

तेरे लब पर ये जुमले हाय तोबा

वो मुझसे पूछ बैठा कल की बातें

मैं बोली हंसते-हंसते हाय तोबा

बहुत कुछ हाय तोबा में छुपा है

कोई सिम्मी से पूछे हाय तोबा

नज़र की पुतलियां जलने लगी हैं

तेरे बिन सिसकियां जलने लगी हैं

हथेली पर ह़िना आतिश बनी है

मुसलसल चूड़ियां जलने लगी हैं

नज़ाकत नज़रे आतिश हो रही है

अदाएं शोखियां जलने लगी हैं

सनम रुख़सार अफ़सुरदा हुए हैं

लबों की सुर्खियां जलने लगी हैं

महेज करके जुदाई का तसव्वुर

ज़हेन कि डालियां जलने लगी हैं

मुह़ब्बत की ये हा़लत देख करके

गुलों से तितलियां जलने लगी हैं

विसाली ख़्वाब ही देखा था मैंने

क्यों ज़ालिम सर्दियां जलने लगी हैं

ज़रा आकर के देखो जाने सिम्मी

मिलन की रोटियां जलने लगी हैं

मुश्किल को आसान करो अब आ जाओ

मुझ पर ये एहसान करो अब आ जाओ

राह को तकती बैठ के रोया करती हूं

इतना मत हैरान करो अब आ जाओ

अब तो लहू भी आंसू बनकर बहते हैं

आंखें ना वीरान करो अब आ जाओ

तड़प रही हूं एक झलक को बरसों से

मेरा कुछ तो ध्यान करो अब आ जाओ

खुली फ़िज़ा ने मुझको पल पल मारा है

बाहों को ज़िंदान करो अब आ जाओ

यार तुम्हारे ग़म में सांसे अटक गईं

ग़म को कुछ हलकान करो अब आ जाओ

इश्क़ के हक़ को अदा करो पाबंदी से

पूरे हर अरकान करो अब आ जाओ

सिम्मी तुम्हारी तुम से गुज़ारिश करती है

कोशिश मेरी जान करो अब आ जाओ

इश्क़ करना कहीं मना है क्या

गर नहीं है तो फिर बुरा है क्या

दिल को आना था आ गया उन पर

इसमें दिल की कोई ख़ता है क्या

ख़ुशनसीबों को इश्क़ होता है

कर ले कर ले तू सोचता है क्या

यार की खा़मुशी क़यामत है

देखना है कि बोलता है क्या

सुर्ख़ आंखें हैं तेरी मेरी तरह

रतजगा तूने भी किया है क्या

मेरे पहलू में आ गए हो तुम

क्या बताऊं के पा लिया है क्या

ऐ ज़माने कभी चली है तेरी

इश्क़ वालों को रोकता है क्या

इश्क़ करना था कर लिया सिम्मी

कौन डरता है अब सज़ा है क्या

इश्क़ का इज़हार होने तक रुको

आप तो बस प्यार होने तक रूको

जिरहें ढालें सब धरी रह जायेंगी

बस नज़र के वॉर होने तक रुको

ईद हम भी कल मना लें शौक़ से

चांद का दीदार होने तक रुको

रात आधी और ज़िद जाने की है

सहर तो सरकार होने तक रुको

हम नज़र आएंगे तुमको चार सु

बस नज़र के चार होने तक रुको

चंद लम्हों में दिखाएंगे हुनर

तीर दिल के पार होने तक रुको

सिम्मी हैं कागज़ क़लम है और तुम

यार कुछ अशआ़र होने तक रुको

तु मेरा चैन है तु है मेरा क़रार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

ज़हर तन्हाइयों का पीयूं किस तरह़

तेरे बिन जाने जांना जीयूं किस तरह़

मेरी हर सांस को है तेरा इंतेज़ार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

मेरे दिलबर सनम मेरे रूहे रवां

आज़मा ले भले चाहे ले इम्तिहां

मैं तो कांटों पे चलकर दिखा दूंगी यार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

इश्क़ में तेरे ह़द से गुज़र जाऊंगी

साथ तूने जो छोड़ा तो मर जाऊंगी

इश्क़ तुझसे किया है सनम बेशुमार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

दास्तां बन गई ये कहानी हुई

लोग कहते हैं मुझको दीवानी हुई

सारे लोगों को मैंने किया दरकिनार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

शाम ढाती है मुझ पे यूं जुल्मों सितम

और करती है बादे सबा आंख नम

सब्र को मैंने फिर भी रखा बरक़रार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

दिल की इस सल्तनत का तू सुल्तान है

तू मेरा इश्क़ है तू मेरी जान है

मेरी हर सांस पर है तेरा इख़्तियार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

बे सबब ही नहीं तेरी ये दूरियां

जानती हूं सनम तेरी मजबूरियां

तेरे वादे पे सिम्मी को है ऐतबार

तू मेरा प्यार है सिर्फ तू मेरा प्यार

तेरा सदक़ा उतार दूं आजा

आजा आजा के प्यार दूं आजा

तेरे शाने पे रख के सर दिलबर

उम्र सारी गुज़ार दूं आजा

तुझ पे वारूं मैं अपने रातों दिन

ज़िंदगी तुझ पे वार दूं आजा

आजा तुझको खुली इजाज़त है

मौक़ा एक शानदार दूं आजा

तेरी राहों में दिल बिछा दूं मैं

तुझको बाहों के हार दूं आजा

उम्र भर चढके जो नहीं उतरे

कोई ऐसा खुंमार दूं आजा

ग़ैर मुमकिन है तर्के मुश्ताकी़

कैसे ख़्वाहिश को मार दूं आजा

मुझ पे लिखना तू रात भर गजलें

जा़विए बेशुमार दूं आजा

सिम्मी समझाऊं कैसे इस दिल को

कैसे चैन वो क़रार दूं आजा

आंखों का ये खुमार तुम्हारे लिए सनम

ये दिल में दिल का प्यार तुम्हारे लिए सनम

लाई हूं चाहतों की हँसीं खुश्बुओं के साथ

रंगिनिये बहार तुम्हारे लिए सनम

रग रग में है जो इश्क़ का दरिया रवां दवां

रहती हूं बेक़रार तुम्हारे लिए सनम

राहों से दूर करते हुए मुश्किलात को

आउंगी बार बार तुम्हारे लिए सनम

दीदार की तलब है मुसलसल बस इस लिए

आँखें हैं अश्क़ बार तुम्हारे लिए सनम

बेवा सी शक्ल हो गई फीके पड़े हैं रंग

बदला है हर मेआ़र तुम्हारे लिए सनम

माहे मुबीन तकते रहे सारी रात हम

तारे किए शुमार तुम्हारे लिए सनम

ऐ काश आके देख लो तुम मुझको एक बार

मैंने किया सिंगार तुम्हारे लिए सनम

सिम्मी को गर मिले जो इजाज़त तो फिर लिखे

एक शेर शानदार तुम्हारे लिए सनम

हमारे दिल में कोई इंतेशार होने लगा

हमें ख़बर ना हुई और प्यार होने लगा

तुम्हारी बातें गईं सीधे दिल के अंदर तक

तुम्हारे लफ्जों से कुछ ऐसे वार होने लगा

तुम्हारे साथ हि लगता है दिल मेरा अक्सर

तुम्हारे बाद बहुत बेक़रार होने लगा

कहीं किसी का कभी भी ना इंतेज़ार किया

ना जाने कैसे तेरा इंतेज़ार होने लगा

तू झूठ बोल दे या सच कहे तेरी मर्ज़ी

हर एक बात पर अब ऐतबार होने लगा

मैं कोई बात करूं तो तुम्हारा नाम आए

तुम्हारा ज़िक्र सनम बार-बार होने लगा

तुम्हारे ख़्वाब ही आते हैं अब तो सिम्मी को

तुम्हारा नश्शा तुम्हारा खुमार होने लगा